दादी प्रकाशमणी का अदभुत नेतृत्व

Dr.Dadi Prakashmani a leader of different kind

संसार की गतिविधियां, संसार के लोगो, समाज के कार्यक्रमों आदि का अधिकतम संचालन वही लोग करते है जिनमें नेतृत्व की क्षमता होती है । सफल नेतृत्व उन्ही का होता है जो अपने से ज्यादा तरजीह सामने वाले को देते है। चाहे वे लोग हो, लक्ष्य हो, योजनाए हो, कार्यक्रम हो अथवा नजरअंदाज होने वाली मामूली सी गतिविधियां हो। 1969 से 2007 तक निरन्तर 38 वर्षो तक ऐसे सफल नेतृत्व की मिशाल बनी प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय की पूर्व मुख्य प्रशासिका डा.राजयोगीनी दादी प्रकाशमणी। वे सच्ची नेता थी जिनके नेतृत्व में संस्था ने विश्व व्यापी पहचान के साथ समाज पर अपनी पकड़ बनायी, इसीलिए वे नेता से बढ़कर मां कहलायी।

लेखक ने उनके नेतृत्व करने की शैली को करीब से देखा है। वे इस बात की अच्छी तरह से अनुभवी थी कि मानव संसाधन ही वो संसाधान है जिनकी क्षमता का दोहन करके जगत को उसके उच्चतम शिखर पर पहुँचाया जा सकता है। अपने इस अनुभव का उन्होने न केवल संस्था के विस्तार, संस्था की शिक्षाओ के प्रति सर्व मान्यता आदि में उपयोग किया बल्कि धर्म जगत व्यवसाय के आधार पर वर्ग जगत, में समानता, सामन्जसय को विकसित करने में सफल रही। उन्होने विभिन्न धर्म के आचार्यो, विद्वानो को एक साथ लेकर धर्म में आध्यात्मिकता के समावेश की पहल की। आपने अपने-अपने क्षेत्रो में कार्य करने वाले सक्षम लोगों को प्रेरणा दी कि वे सांसारिक कार्यो के साथ अपने व्यवसाय में आध्यात्मिक गतिविधियों को जोड़े। व्यवसाय में आध्यात्मिकता के समावेश पर उनकी दृष्टि थी कि वे स्वयं में ईश्वर के साथ जुड़ेंगे तथा ईश्वर के साथ जुड़ने से लोगों को बेहतर सेवाये प्रदान कर सकेगें। बेहतर सेवाओ के परिणाम स्वरुप समाज में स्वछता, ईमानदारी, सत्कार, स्नेह जैसे गुण विकसित होगें। वे सलाह देती डाक्टर डबल डाक्टर बने, रोगी के शरीर के साथ-साथ वे उसकी आत्मा , मन के सबल होने का भी उपाय सुझायें ताकि मन की कमजोर अवस्था शरीर को रोगी न बनाये। ऐसे ही वे डबल सर्विस, डबल व्यापार करने के लिए प्रेरित करती। उनकी इन्ही प्रेरणाओ को पाकर लोगों ने अपने कार्य क्षेत्रो में प्रगति का अनुभव किया। बेहतर परिणामो से लोगों को आध्यात्मिकता के प्रैक्टिकल स्वरुप को समझने में मदद मिली।

आध्यात्मिकता के विकास के लिए आर्थिक सहयोग को भी दादी जी ने सदा ही सराहा। वे मानती थी जिन्होंने भी सहयोग दिया है उन्होंने अपनी सामर्थ्य के अनुसार दिया है अतः हर कोई ईश्वर के प्यार एवं सम्मान का अधिकारी है। उनकी इसी सम्मान की भावना ने दादी जी में ऐसा चुम्बकीय आकषर्ण भरा कि हर कोई सहज ही उनकी ओर खिचा चला जाता और दिल, जान, जिगर से सहयोगी बन जाता।

देखने में आया जब नन्हे मुन्ने बच्चे सांस्कृतिक कार्यक्रमों में अपनी प्रस्तुती देते तो वे सदा ही गुलदस्ते भेंट कर उन्हे प्रोत्साहित करती। अति व्यस्ततम कार्यक्रमों में भी वे अपनी उपस्थिति

दर्ज कराने के लिए दर्शक दीर्धा में बैठ तालियां बजाकर बच्चो का मन मोह लेती। उनका उत्साह वर्धन करती। बच्चों के आयोजनो मे तरह -तरह के व्यजन बनवाकर बच्चो के दिल की आश पूरा करती। संस्था में आने वाले हर अतिथि का वे व्यक्तिगत स्तर पर भी पूरा ध्यान रखती। बड़े -बड़े आयोजनो में वे टेन्टो में चक्कर लगाकर सबकी थकान दूर कर देती।

स्वमान से परिपूर्ण जीवन एंव सम्मान पूर्ण व्यवहार दादी के नेतृत्व का मूल मन्त्र रहा। कोई उनसे नाराज हो यह कभी देखने में नही आया। उनकी योजनाओ में कोई सहभागी न बना हो या तटस्थ हुआ हो एक भी कारण कभी ऐसा नही बन पाया। विस्तार में व्यवस्था के लिए उन्होने स्नेह को मुख्य हथियार बनाया। परिवर्तन सहज नही होते, लेकिन बड़े से बड़े परिवर्तन भी उन्होने स्नेह की शक्ति के आधार पर किये। एक बार 3 मास के लिए सर्व राजयोग केन्द्रो की मुख्य बहनों का उन्होने राष्ट्रीय स्तर पर परिवर्तन कर अपनी बेजोड़ नेतृत्व क्षमता का परिचय दिया। इस सब के पीछे उनका शुभ भाव एवं स्नेह भाव ही था। 25 अगस्त हम सबकी प्यारी दादी मां का पुण्य स्मृति दिवस है। जिसे भारत तथा विश्व भर में भ्रातृत्व दिवस के रुप में मनाया जाता है

बी.के सुधीर कुमार

शांतिवन, माउण्ट आबू

www.liveindia.com